Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 10, Issue 1 - 2025, Pg. No. 15-16
Peer Reviewed Journal

Review Article

शिक्षक शिक्षा: अवसर, चुनौतियाँ और समाधान

Chaman Singh Thakur

Ph.D. Education M.A. Hindi M.A. Pol. Science M.A. Yoga M.ED. PGDHE

I N F O

E-mail Id:
Prof.chaman2019@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0003-3814-2995

Date of Submission: 2025-05-06
Date of Acceptance: 2025-06-10

सारांश

भारत में शिक्षक शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशय है, क्योंकि शिक्षक ही शिक्षा प्रणाली की नींव हैं। स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात कई शिक्षा आयोगों व समितियों ने शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधारने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। हंटर आयोग, राधाकृश्णन आयोग, कोठारी आयोग आदि ने स्पष्ट रूप से बताया कि जब तक शिक्षक प्रशिक्षित, योग्य और नैतिक मूल्यों से युक्त नहीं होंगे, तब तक शिक्षा प्रणाली में अपेक्षित सुधार संभव नहीं है।

आज भी देश में अनेक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत हैं, परंतु संसाधनों की कमी, गुणवत्ता का अभाव और शिक्षण को मात्र व्यवसाय समझने की मानसिकता के कारण शिक्षकों का स्तर गिरता जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया बाधित होती है और विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

इसलिए आज आवश्यकता है कि शिक्षक शिक्षा को व्यावहारिक, मूल्यनिष्ठ और समर्पित रूप में विकसित किया जाए। केवल प्रशिक्षित ही नहीं, बल्कि प्रेरणादायी और आदर्श शिक्षक ही राष्ट्र निर्माण में प्रभावी योगदान दे सकते हैं। एक मजबूत शिक्षक शिक्षा प्रणाली ही एक समृद्ध और सशक्त भारत की आधारशिला बन सकती है।

मुख्य शब्द: शिक्षक शिक्षा, प्रशिक्षण संस्थान, शैक्षिक सुधार, राष्ट्र निर्माण, शिक्षा आयोग, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है, और शिक्षक उस आत्मा के संरक्षक। एक शिक्षित समाज का निर्माण केवल तब संभव है जब उस समाज के शिक्षक सुशिक्षित, प्रशिक्षित और मूल्यनिष्ठ हों। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले और विकासशील देश में शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए शिक्षक शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।[1]

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व एवं पश्चात अनेक शिक्षा आयोगों और समितियों ने यह स्वीकार किया है कि शिक्षक न केवल ज्ञान देने वाले होते हैं, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण के वास्तविक शिल्पकार होते हैं। इसी कारण शिक्षक प्रशिक्षण को समय–समय पर पुनः मूल्यांकित और सुदृढ़ करने की आवश्यकता महसूस की गई है।[2]

आज जब शिक्षा प्रणाली आधुनिकता, प्रतिस्पर्धा और वैश्विक मानकों की ओर अग्रसर है, तब यह और भी आवश्यक हो गया है कि हमारे शिक्षक केवल विशयविज्ञ नहीं, बल्कि प्रेरणास्त्रोत भी हों। प्रस्तुत लेख इसी दिशा में शिक्षक शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उसमें निहित अवसरों और चुनौतियों पर विचार करता है, जिससे शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाया जा सके और भावी पीढ़ी को एक उज्ज्वल भविष्य प्रदान किया जा सके।[3]

शिक्षा आयोगों की ऐतिहासिक भूमिका

भारत की स्वतंत्रता से पूर्व एवं पश्चात समय–समय पर कई शिक्षा आयोगों और समितियों का गठन हुआ - हंटर आयोग (1882), सैडलर आयोग (1917), वुड्स डिस्पैच (1854), और स्वतंत्रता के बाद राधाकृष्णन आयोग (1948), मुदालियर आयोग (1952), कोठारी आयोग (1964–66) आदि प्रमुख रहे। सभी का मूल उद्देश्य एक ही रहा - गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण की स्थापना।

Copyright (c) 2025: Author(s). Published by Advanced Research Publications

इन सभी आयोगों ने यह माना कि यदि शिक्षक प्रशिक्षित नहीं होंगे, तो शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट सुनिष्चित है। विशेष रूप से कोठारी आयोग ने हर राज्य में स्टेट टीचर एजुकेशन बोर्ड की स्थापना की सिफारिश की, ताकि समग्र रूप से शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को सशक्त किया जा सके।

प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता और चुनौतियाँ

लेख में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि देशभर में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है, किंतु उनमें गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण का भारी अभाव है। प्रशिक्षकों की योग्यता, संसाधनों की कमी और पाठ्यक्रम की अप्रासंगिकता जैसे मुद्दे आज भी मूल रूप से बने हुए हैं।

बहुत से संस्थान सिर्फ औपचारिकता निभा रहे हैं, जिससे प्रशिक्षकों में आदर्श शिक्षक के गुणों का अभाव बना रहता है। इससे शिक्षा प्रणाली में सुधार अपेक्षित परिणाम नहीं दे पा रही।[4]

शिक्षा को व्यवसायिक दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति

लेख का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि आज अनेक शिक्षक शिक्षा को केवल एक व्यवसाय के रूप में देखते हैं, न कि राष्ट्र निर्माण के एक साधन के रूप में। इस मानसिकता के चलते वे अपनी भूमिका को पूरी निष्ठा से नहीं निभा पाते। इस प्रवृत्ति पर गहन आत्मचिंतन की आवश्यकता है।

अंग्रेजीकरण और भाशाई मानसिकता की बाधा

लेख में ब्रिटिश शासन द्वारा थोपे गए अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व और उसकी शिक्षा प्रणाली पर आलोचनात्मक दृश्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। आज भी अंग्रेजी भाषा का डर और उसका सामाजिक मूल्य भारत की शिक्षा व्यवस्था को असंतुलित करता है। यह मानसिकता ग्रामीण और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए एक बड़ी बाधा बन गई है।[5–9]

समाधान और सुधार की दिशा

गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण: केवल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या नहीं, उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करना सबसे आवश्यक है।[10]

शिक्षक में नैतिकता एवं आदर्शों का विकासरू शिक्षक को केवल ज्ञान नहीं बल्कि मानवीय मूल्य और राष्ट्रभक्ति से भी युक्त होना चाहिए।[11]

व्यवहारिक शिक्षा पर बल: राधाकृश्णन आयोग की सिफारिश के अनुसार व्यवहारिक शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।[12]

शिक्षकों की सामाजिक स्थिति में सुधार: समाज में शिक्षक का सम्मान पुनः स्थापित करना जरूरी है ताकि सर्वश्रेश्ठ प्रतिभाएँ इस क्षेत्र की ओर आकर्शित हो सकें।[13]

निष्कर्ष

डॉ. चमन सिंह ठाकुर द्वारा लिखा गया आलेख आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। इसमें शिक्षक शिक्षा की जमीनी हकीकत, इतिहास से लेकर वर्तमान तक की चुनौतियाँ और उनके समाधान की संभावनाओं को गंभीरता से उठाया गया है। यह आलेख हमें यह सोचने को विवश करता है कि जब तक शिक्षक स्वयं प्रशिक्षित, प्रतिबद्ध और संस्कारित नहीं होंगे, तब तक शिक्षा और देश - दोनों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो सकता।

सच्चे राष्ट्र निर्माता वही शिक्षक हैं, जो केवल पाठ्यपुस्तकों से नहीं, अपने आचरण से भी विद्यार्थियों को शिक्षित करें।

संदर्भ सूची

1. हंटर आयोग (1882) - भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रथम संगठित सुझावों में शिक्षक प्रशिक्षण पर विशेष बल।
2. सैडलर आयोग (1917–19) - विश्वविद्यालय और माध्यमिक शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण की सिफारिशें।
3. राधाकृश्णन आयोग (1948–49) - उच्च शिक्षा में शिक्षक शिक्षा की भूमिका और नैतिक मूल्यों का समावेश।
4. मुदालियर आयोग (1952–53) - माध्यमिक शिक्षा के शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों में सुधार के सुझाव।
5. कोठारी आयोग (1964–66) - शिक्षक शिक्षा पर आधारित एकीकृत दृश्टिकोण एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण बोर्ड की स्थापना की अनुशंसा।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 1986, संशोधित 1992) - शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता और इन–सर्विस ट्रेनिंग पर बल।
7. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF 2005) - शिक्षकों की भूमिका को निर्माणकर्ता एवं मार्गदर्शक के रूप में परिभाषित किया।
8. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिशद (NCTE) दस्तावेज, 2009 - शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के मानक और दिशानिर्देश।
9. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) - शिक्षक शिक्षा को 2030 तक एकीकृत 4–वर्शीय बी.एड. कार्यक्रम में रूपांतरित करने की योजना।
10. UNESCO (2015). "Education for All- Global Monitoring Report" – वैश्विक संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका और चुनौतियाँ।
11. Govinda, R. (2012). "Teacher Education in India." NUEPA Working Paper Series- भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की जमीनी हकीकत।
12. डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा - B.Ed. पाठ्यक्रम सामग्री - शिक्षक शिक्षा के सिद्धांत, विधियाँ और व्यवहार।
13. NCERT (2014). "Status of Teacher Education in India: A Study of Selected TEIs"- भारत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थिति पर आधारित शोध।